ॐ

उपशास्त्री, राष्ट्रभाषा हिन्दी, अ० द्वि० - पत्र
द्वितीय - भाग - 2. गद्य खण्ड

शीर्षक - 'बातचीत'
लेखक - बालकृष्ण भट्ट

लघु उत्तरीय प्रश्नोत्तर -

प्रश्न :- मनुष्य की बातचीत का उत्तम तरीका क्या हो सकता है? इसके द्वारा वह कैसे सर्वथा नवीन संसार की रचना कर सकता है?

उत्तर :- सुविख्यात निबंधकार बालकृष्ण भट्ट के अनुसार सबसे उत्तम प्रकार की बातचीत अपने में वह शक्ति पैदा करना है जिससे व्यक्ति 'स्व' से बात कर सके। हमारी भीतरी मनोवृत्ति प्रतिक्षण नए-नए रंग दिखाया करती है, वह प्रपंचात्मक संसार का एक भारी आईना है, जिसमें इच्छानुसार प्रतिबिंब देख लेना कोई आश्चर्य की बात नहीं है।

निबन्धकार के अनुसार मनुष्य अपने हृदयरूपी चमनिस्तान में सैर का मनोयोग या चित्त को एकाग्रचित करने की साधना से प्राप्त सिद्धि के बल पर सर्वथा नवीन संसार की रचना कर सकता है। मनुष्य अवाक् रह 'स्व' से बातचीत को साहय कर साधनों का मूल, शक्ति का परम पूज्य मंदिर, परमार्थ के सोपान को प्राप्त कर सकता है।

मौन साधना के बल पर मनुष्य बड़े-बड़े अजेय शत्रुओं को बिना प्रयास जीतकर अपने वश में कर सकता है। इस प्रकार निबंधकार का स्पष्ट मत है कि मौनसाधना कर स्व में विलीन होकर मनुष्य अपने लिए नवीन सपनों का संसार बना सकता है।

डॉ० देव चरण प्रसाद
एसो० प्रो० हिन्दी 06/10/20
रा०उ० सं० महाविद्यालय सुखसेना, पूर्णियाँ

शास्त्री प्रथम खण्ड, राष्ट्रभाषा हिन्दी, अष्टम पत्र

'निर्मला' उपन्यास

लेखक - मुंशी प्रेमचन्द

प्रश्न :- भाषा-शैली और उद्देश्य की दृष्टि से प्रेमचन्द की उपन्यास-कला की समीक्षा कीजिए।

उत्तर :- उपन्यास सम्राट मुंशी प्रेमचन्द की शैली पर उर्दू का अच्छा प्रभाव है। वस्तुतः प्रेमचन्द उर्दू से ही हिन्दी की ओर आये थे। उनकी शैली परिमार्जित और स्वाभाविक है। हिन्दी और उर्दू के प्रभाव से उन्होंने जिस समन्वय को स्थिर किया है, वह वर्तमान हिन्दी गद्य की विशेषता बन गया है।

प्रेमचन्द की शैली में नाटकियता है। मुहावरों और कहावतों के प्रयोग से भाषा में प्रवाहात्मकता आ गई है। प्रेमचन्द जी की शैली में हास्य और व्यंग्य का पुट भी मिलता है। उपन्यासकार मुंशी प्रेमचन्द का व्यंग्य तीखा होता है।

प्रेमचन्द का भाषा पर एकाधिकार था कि वे बड़ी सहजता से कठिन से कठिन सूक्ष्म से सूक्ष्म भाव को व्यक्त कर देते थे। उदाहरण के रूप में उनकी कुछ पंक्तियों को हम देख सकते हैं- "मानव चरित्र न बिल्कुल श्यामल होता है न बिल्कुल श्वेत। उसमें दोनों ही रंगों का विभिन्न परिणाम होता है।"

प्रेमचन्दजी अपनी भाषा-शैली के निर्माता थे। उनकी भाषा-शैली प्रेमचन्दी भाषा-शैली कहलाती है। उनकी रचनाओं में भाषा का व्यवहारिक रूप सर्वत्र दिखाई पड़ता है।

प्रेमचन्द कला को जीवन एवं लोकहित के लिए मानते थे। उन्होंने 'उपन्यास' नामक अपने निबंध में लिखा है- "साहित्य का सबसे ऊँचा आदर्श यह है कि उसकी रचना केवल कला की पूर्ति के लिए न किया जाए। 'कला-कला के लिए' के सिद्धान्त पर किसी को आपत्ति नहीं हो सकती। वह साहित्य चिरायु हो सकता है, जो मनुष्य की मौलिक प्रवृत्तियों पर अवलम्बित हो। ईर्ष्या और प्रेम,

शेष आगे -

शास्त्री द्वितीय खण्ड, राष्ट्रभाषा हिन्दी, अ० द्वि०-पत्र
'पथिक' खण्ड काव्य
कवि - श्रीरामनरेश त्रिपाठी

Date ______ Page ______

लघु उत्तरीय प्रश्नोत्तर -

प्रश्न :- 'पथिक' के द्वितीय सर्ग में मुनि ने पथिक को किस प्रकार का उपदेश दिया है?

उत्तर :- 'पथिक' खण्ड काव्य के द्वितीय सर्ग में कवि मुनि के द्वारा पथिक को कर्मण्यता का उपदेश देते हुए कहता है कि यह संसार हमारी कर्मस्थली है। यहाँ सभी को अपने कर्तव्य का निर्वाह करना पड़ता है। संसार के जितने भी जड़, चेतन, स्थावर पदार्थ हैं सभी अपने-अपने काम लगे हैं। इस संसार के प्रत्येक प्राणी के जीवन का एक निश्चित उद्देश्य है जिसकी पूर्ति के लिए वह जीवन भर प्रयत्न करता है।

इस संसार में सभी अपने-अपने कार्य में व्यस्त हैं। सूर्य इस संसार को शोभा प्रदान करता है और चन्द्रमा अमृत की वर्षा करता है। इस संसार में कोई भी आलसी बनकर बैठा हुआ नहीं है। तुच्छ घास के जीवन का भी कोई न कोई उद्देश्य है। उसी से वह अपने कर्तव्यमय जीवन का अन्त कर देती है।

प्रश्न :- मुनि 'पथिक' को किस प्रकार कर्तव्य का बोध कराता है?

उत्तर :- 'पथिक' खण्ड काव्य में मुनि द्वारा पथिक को विस्तार से उसे कर्तव्य का बोध कराता है। मुनि कहता है कि यह पृथ्वी माता स्नेह की मूर्ति और दयालु है। क्या उसके प्रति तुम्हारा कुछ भी कर्तव्य नहीं है? तुम्हारे परिवार वालों ने तुम्हें चलना सिखाया और भाषा का ज्ञान देकर हृदय की भावनाओं का मूर्त रूप दिखाने में मदद की है। क्या उनके प्रति तुम्हारा कोई कर्तव्य नहीं है? तुम्हें तो केवल अपनी ही चिन्ता है। तभी मस्त होकर एकांत में गीत गाते हो। तुम अकेले खाते-पीते और हँसते हुए मौज कर रहे हो। संसार से दूर रहकर अपना स्वार्थ सिद्ध करना ही तुमने अपने कीर्ति का रूप समझ लिया है। परन्तु तुम्हीं सोचो कि इस संसार में तुम्हारे समान कौन सा व्यक्ति स्वार्थ के वशीभूत है।

डॉ० देवचरण प्रसाद
दर्शन प्रो० हिन्दी 06|10|20
रा० उ० सं० महावि० सुरसेक? पूर्णिया

क्रोध और लोभ, भक्ति और विषय, दुःख और लज्जा ये सभी हमारी प्रवृत्तियाँ हैं। इन्हीं की छटा दिखाना साहित्य का परम उद्देश्य है और बिना उद्देश्य के तो कोई रचना हो ही नहीं सकती।"
इस प्रकार भाषा-शैली और उद्देश्य की दृष्टि से प्रेमचन्द की रचनाएँ आदर्श प्रस्तुत करती हैं।

डॉ० देवचरण प्रसाद 06/11/20
एसो० प्रो० हिन्दी
रा० उ० स० महा वि० (सुखसेना) पूर्णियाँ